सदगति

- प्रेमचंद

दुखी चमार द्वार पर झाड़ू लगा रहा था और उसकी पत्नी झुरिया घर को गोबर से लीप रही थी । दोनों अपने-अपने काम से फ़ुर्सत पा चुके, तो चमारिन ने कहा - तो जाके पंडित बाबा से कह आओ न । ऐसा न हो कहीं चले जाएँ ।

दुखी - हाँ जाता हूँ, लेकिन यह तो सोच, बैठेंगे किस चीज़ पर ?
झुरिया - कहीं से खटिया न मिल जायगी ? ठकुराने से माँग लेना ।
दुखी - इ तो कभी-कभी ऐसी बात कह देती है कि दह जल जाती है । ठकुराने वाले मुझे खटिया देंगे । आग तक तो घर से निकलती नहीं, खटिया देंगे । कैथाने में जाकर एक लौटा पानी माँगू तो न मिले, भला खटिया कौन देगा ? हमारे उपले, सेंठे, भूसा, लकड़ी थोड़े ही है कि जो चाहे उठा ले जायँ । ला अपनी खटोली धोकर रख दे । गरमी के तो दिन हैं । उनके आते-आते सूख जायगी ।

झुरिया - वह हमारी खटोली पर बैठेंगे नहीं । - देखते नहीं कितने नेम-धरम से रहते हैं ।

दुखी ने जरा चिंतित होकर कहा - हाँ, यह बात तो है । महुए के पत्ते तोड़कर एक पत्तल बना लूँ तो ठीक हो जाय । पत्तल में बड़े-बड़े आदमी खाते हैं । वह पवित्तर है । ला तो डंडा पत्ते तोड़ लूँ ।

झुरिया - पत्तल मैं बना लूँगी, तुम जाओ । लेकिन हाँ, उन्हें सीधा भी तो देना होगा । अपनी थाली में रख दूँ ।

दुखी - कहीं ऐसा गज़ब न करना, नहीं तो सीधा भी जाय और थाली भी फूटे । बाबा थाली उठाकर पटक देंगे । उनको बड़ी जल्दी किरोध चढ़ आता है । किरोध में पंडिताइन तक को छोड़ते नहीं, लड़के को ऐसा पीटा कि आज तक टूटा हाथ लिये फिरता है । पत्तल में सीधा देना, हाँ । मुदा तू छूना मत । सीधा भरपूर हो । सेर भर आटा, आधा सेर चावल, पाव भर दाल, आध पाव घी, नोन, हल्दी और पत्तल में एक किनारे चार आने पैसे रख देना ।

गोंड की लड़की न मिले तो भूँजिन के हाथ पैर जोड़कर ले जाना । तू कुछ मत छुना - नहीं गजब हो जाएगा ।

इन बातों की ताकीद करके दुखी ने लकड़ी उठाई और घास का एक बड़ा सा गट्ठा लेकर पंडितजी से अर्ज करने चला । खाली हाथ बाबाजी की सेवा में कैसे जाता । नजराने के लिए उसके पास घास के सिवाय और क्या था । उसे खाली हाथ देखकर तो बाबा दूर से ही दुत्कारते ।

x x x

पंडित घासीराम ईश्वर के परम भक्त थे, नींद खुलते ही ईशोपासन में लग जाते । मुँह-हाथ धोते आठ बजते, तब असली पूजा शुरू होती, जिसका पहला भाग भंग की तैयारी थी । उसके बाद आध घंटे तक चन्दन रगड़ते, फिर आईने के सामने एक तिनके से माथे पर तिलक लगाते । बाँहों पर चन्दन की गोल-गोल मुद्रिकाएँ बनाते । फिर ठाकुर जी की मूर्ति निकालकर उसे नहलाते, चन्दन लगाते, फूल चढ़ाते, आरती करते, घण्टी बजाते । दस बजते-बजते वह पूजन से उठते और भंग छानकर बाहर आते । तब तक दो चार जजमान द्वार पर आ जाते । ईशोपासन का तत्काल फल मिल जाता । यही उनकी खेती थी ।

आज वह पूजन गृह से निकले, तो देखा दुखी चमार घास का एक गट्ठा लिए बैठा है । दुखी इन्हें देखते ही उठ खड़ा हुआ । दुखी को देखकर श्रीमुख से बोले - आज कैसे चला रे दुखिया ?

दुखी ने सिर झुका कर कहा - बिटिया की सगाई कर रहा हूँ महाराज । कुछ साइत-सगुन विचारना है । कब मर्जी होगी ?

घासी - आज मुझे छुट्टी नहीं । हाँ साँझ तक आ जाऊँगा ।

दुखी - नहीं, महाराज जल्दी मर्जी हो जाय । सब सामान ठीक कर आया हूँ । यह घास कहाँ रख दूँ ।

घासी - इस गाय के सामने डाल दे । यह बैठक भी कई दिन से लीपी नहीं गई । उसे भी गोबर से लीप दे । तब तक भोजन कर लूँ । फिर जरा आराम करके चलूँगा ।

हाँ, यह लकड़ी भी चीड़ देना । खलिहान में चार खाँची भूसा पड़ा है । उसे भी उठा लाना और भुसौले में रख देना ।

दुखी फौरन हुक्म की तामील करने लगा । द्वार पर झाड़ू लगाई, बैठक को गोबर से लीपा । तब तक बारह बज गये । पंडितजी भोजन करने चले गये । दुखी ने सुबह से कुछ नहीं खाया था । उसे भी जोर की भूख लगी पर कहीं खाने चला जाय, तो पंडितजी बिगड़ जाएँ । बेचारे ने भूख लगी पर कहीं खाने चला जाये, तो पंडितजी बिगड़ जाएँ । बेचारे ने भूख दबाई और लकड़ी फाड़ने लगा । लकड़ी की मोटी-सी गाँठ थी, जिस पर पहले ही कितने भक्तों ने अपना जोर अजमा लिया था । वह उसी दम-खम के साथ लोहे से लोहे लेने के लिए त्यौर था । दुखी घास छीलकर बाजार ले जाता था ।